Open Access
उदयगिरी - बहुभाषिक इतिहास संशोधन पत्रिका
(A Bimonthly, Refereed, & Peer Reviewed Journal of History)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://udayagiri.aaassher.org/
ISSN (Online): 2583-8423
Volume 1, Issue 4, October 2023; Pages 241 – 244
DOI: 10.5281/zenodo.10115573

Original Research Article

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की सत्य और अहिंसा की अवधारणा

प्रा. डॉ. गोविंद केरबा शिळे

विभाग प्रमुख, पालि विभाग, कर्मयोगो तुळशीराम पवार महाविद्यालय, हडोळती ता. अहमदपूर जि. लातूर ४१३५१४ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: dr.govindshile@gmail.com

Received: 13 October, 2023 | Accepted: 25 October, 2023 | Published: 27 October, 2023

प्रस्तावना

गांधीजी इस सदी के सबसे महान नेता हैं। सत्य को बोलने की आवश्यकता नहीं होती, वह हमारे कार्यों में झलकता है। सत्य का पालन करने से मनुष्य का अवश्य ही विकास होगा। अहिंसा केवल अहिंसा नहीं है, बल्कि अपने धर्म के साथ-साथ दूसरे धर्मों को भी महत्व देना है। गांधीजी के अनुसार, अहिंसा मनुष्य का स्थायी स्वभाव है। जो देश और समाज अहिंसा के मार्ग पर चलते हैं, उन्हें आत्म-सम्मान त्यागना और बाकी सब कुछ त्यागना सीखना चाहिए। इसीलिए गांधीजी कहते हैं कि अहिंसा नहीं है एक कायर की निशानी है, बल्कि एक बहादुर व्यक्ति की निशानी है। इसके अलावा, गांधीजी की अहिंसा की शिक्षाओं का पालन हर कोई कर सकता है। शरीर, हत्यारों, औजारों की कोई आवश्यकता नहीं है। यही कारण है कि गांधीजी का यह अहिंसक आंदोलन बहुत बन गया भारत के आम लोगों के बीच लोकप्रिय। इसके साथ ही गांधीजी सत्य को भी बहुत महत्व देते थे। यदि प्रेम है तो वह सत्य पर है। गांधीजी अहिंसा और सत्य में अंतर नहीं देखते थे। अहिंसा ही साधन है और सत्य ही साध्य है। इसलिए यदि हम साधन का ध्यान रखेंगे तो इसमें कोई संदेह नहीं कि हम साध्य तक पहुंच जाएंगे। गांधीजी कहते है की , चूंकि अहिंसा मनुष्य का स्थायी स्वभाव है, इसलिए यह समस्याओं का समाधान करती है, जबकि हिंसा समस्याओं को बदतर बना देती है। साथ ही, अहिंसा व्यक्ति को बदल देती है, व्यक्ति की बीमारी को ठीक कर देती है और अन्याय करना बंद कर देती है। अहिंसा मजबूत करती है लोगों के बीच आपसी प्रेम का रिश्ता। इसीलिए गांधीजी जितना अंग्रेजों के खिलाफ लड़ रहे थे, उतना ही ब्रिटिश लोगों से भी प्यार करते थे। उतना ही प्यार भारतीय लोगों से भी करते थे। गांधीजी की अहिंसा की विचारधारा पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श बन जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान वैश्विक समस्याओं में से कई को आपसी सहयोग और आपसी प्रेम से हल किया जा सकता

है। इसके अलावा, गांधीजी का अहिंसक सत्याग्रह का तरीका उस समय की परिस्थितियों के अनुसार भारतीय लोगों के लिए दिलचस्प था। उन्होंने इस आंदोलन को आम लोगों तक पहुंचाया और उस आंदोलन को बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली।

सत्य और अहिंसा

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, जापान के पक्ष में होने के कारण ब्रिटिश शासकों द्वारा महात्मा गांधी की आलोचना की गई थी। इस आलोचना से उस समय काफी हंगामा हुआ। इसके जवाब में महात्मा गांधी ने वायसराय को पत्र लिखा. इस पत्र में वह कहते हैं, मुझे यह सुनकर दुख नहीं हुआ कि आप मुझे जापान का मित्र मानते हैं, बल्कि खुश हूं। यदि आप भी मेरी तरह जापान को मित्र के रूप में स्वीकार करने को तैयार हों तो यह विश्व युद्ध तुरंत रुक जाएगा और पूरे विश्व में शांति फैल जाएगी। गांधीजी की अहिंसा सार्वभौमिक थी। वे अहिंसा का प्रत्यक्ष फल अनुभव करना चाहते थे। वे अहिंसा को वास्तविकता बनाना चाहते थे, जैसे चाकू की धार से हिंसा प्रकट होती है और उंगली से खून बहता है। इसीलिए उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के हर आंदोलन में अहिंसा को एक धारदार और क्रांतिकारी हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। उनके अनुसार अहिंसा एक नैतिक शक्ति थी। यह शक्ति ब्रिटिश सत्ता को हिला देने की क्षमता रखती थी। वे जानते थे कि अजस्र की शक्तिशाली शक्ति, जो फोडा और जोडा के सिद्धांत पर खड़ी थी और जिसका सूर्य कभी अस्त नहीं होता था, का मुकाबला हथियारों के माध्यम से करना आम भारतीय की पहुंच से बाहर था।

उसके पास कई कारण थे. विशेषकर 1858 के बाद ब्रिटिश सत्ता ने पूरे देश में नागरिक, पुलिस, न्यायपालिका, सैन्य व्यवस्था स्थापित की। उन्होंने इस व्यवस्था में भारतीयों को जगह दी और कानून के शासन की अवधारणा को भी लागू किया। चूँकि भारत भौगोलिक दृष्टि से एक एकीकृत राष्ट्र था, इसलिए यह नौकरशाही कुछ ही दशकों में गहराई तक स्थापित हो गई। अधिक से अधिक शक्तिशाली हो गयी तथा जनमानस पर उसका दबाव एवं नियंत्रण बढ़ गया। इतने शक्तिशाली ब्रिटिश शासन को देश से बाहर निकालने के लिए लाखों लोगों को हथियार उपलब्ध कराना असंभव था। इसीलिए उन्हें नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा अपनाया गया सशस्त्र क्रांति का रास्ता पसंद नहीं आया। उन्होंने यह नहीं सोचा था कि इस रास्ते से पूर्ण आज़ादी मिल जायेगी।

उनके लिए अहिंसा व्यक्ति की नैतिक और मानसिक शक्ति की परीक्षा थी। उनका मानना था कि गरीब, निर्धन भारतीय जनता हिंसा के स्थान पर अहिंसा को आसानी से अपना सकती है। गांधीजी हमेशा कहते थे कि उनका आंदोलन अंग्रेजों के खिलाफ नहीं, बल्कि व्यक्ति में मौजूद अहंकार के खिलाफ है। लेकिन इससे ब्रिटिश शासन के लिए अक्सर राजनीतिक और नैतिक दुविधाएँ पैदा हो गईं। उनमें आंदोलन को कुचलने को लेकर असमंजस की स्थिति थी. क्योंकि गांधी ब्रिटिश कानून के दायरे में रहकर शांतिपूर्ण तरीके से अहिंसक आंदोलन करते थे. जब आंदोलन को देशव्यापी प्रतिक्रिया मिली तो सरकार अस्थिर हो गयी। आंदोलन को तोड़ने के लिए उन्हें बल प्रयोग करना पड़ा. अंग्रेजों के इस कृत्य से उनमें नैतिक पराजय की भावना उत्पन्न हो गई।

इसके अलावा, चूँकि इस तरह का आंदोलन आसानी से शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती दे सकता था, ब्रिटिश शासकों को भारतीय लोगों के बीच पैदा हुई कठोर भावनाओं के बारे में भी चिंता होगी। एक बार एक जैन साधवी ने गांधीजी से पूछा, 'बापू, लियो टॉल्स्टॉय अहिंसा के धर्म में विश्वास करते थे, लेकिन रूस में क्रांति हिंसक क्यों हो गई? क्रांतिकारियों ने शासकों को जिंदा भी जला दिया।' गांधीजी ने कहा, 'रूसी क्रांति निश्चित रूप से हिंसक थी। लेकिन ध्यान देने वाली बात ये है कि टॉल्स्टॉय की अहिंसा भी अधूरी थी. इससे रूस में हिंसा भड़क उठी। मुझे डर है कि मेरे बाद भी हमारे देश में हिंसा फैल सकती है. मेरा यह वाक्य आप अपनी डायरी में लिख सकते हैं। लेकिन मेरी राय में, क्योंकि लेनिन ने हिंसक क्रांति की थी, इसलिए रूस को इसका परिणाम हिंसक रूप से भुगतना पड़ा। स्टालिन ने लेनिन के समर्थकों की हत्या कर दी. इसलिए, नेक इरादे से की गई हिंसा भी अवांछनीय परिणाम उत्पन्न कर सकती है।'

गांधीजी ने अपने आंदोलन में मौन और उपवास नामक दो हथियारों का भी प्रयोग किया। मौन के संबंध में वे कहते हैं, मौन मुझे विश्राम देता है और इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि मौन ही सर्वोपयोगी साधन है। उपवास पर गांधीजी का रुख राजनीतिक से अधिक आत्म-दया और आत्म-चेतना के बारे में था। केवल दो वर्षों, 1939 और 1943 में, उन्होंने राजनीतिक मांगों के लिए उपवास किया।

अन्य समय में उन्होंने छुआछूत, आंदोलनों के दौरान हिंसा, हिंदू-मुस्लिम दंगों, गुमराह अनुयायियों के विरोध में आत्मशुद्धि के लिए उपवास किया। उनका अनशन मृत्यु के लिए नहीं, बल्कि अनिश्चित काल के लिए था. उन्होंने आत्महत्या को हिंसा के रूप में देखा और यह शरीर पर एक हिंसक हमला भी था।

गांधीजी का दर्शन ईसाई धर्म की कुछ विचारधाराओं से प्रभावित था। उन्होंने धर्मांतरण के मुद्दे पर ईसाई मिशनरियों की आलोचना की. लेकिन हरिजन, कुष्ठरोगियों की सेवा, गाँव के स्वच्छता कार्यक्रम निश्चित रूप से गरीबों, वंचितों की सेवा के लिए ईसाई ननों के परोपकारी रवैये के प्रभाव का हिस्सा थे।

यह कार्यक्रम उनके आंदोलन में एक रचनात्मक कार्य था। ऐसे कार्यक्रमों से सामाजिक सुधारों की आशा की जाती थी, साथ ही विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, खादी प्रचार, शराबबंदी, ग्राम शिक्षा जैसे कार्यक्रमों से सुदूर गाँवों में आंदोलन कायम रहता था। गांधी जी का आंदोलन सदियों से सोये हुए समाज में जागृति लाता था, उसे जीवन शक्ति से भर देता था। गांधीजी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश के सामाजिक और आर्थिक जीवन में पूंजीपतियों, सामंतों और मध्यम वर्ग द्वारा निभाई गई भूमिका के भी खिलाफ थे। उन्होंने कहा कि ये वर्ग गरीबों और वंचितों का भरपूर शोषण करते हैं. गांधीजी के प्रसिद्ध जीवनी लेखक लुई फिशर ने एक बार गांधीजी से पूछा था कि देश के किसानों के उत्थान में उनकी क्या भूमिका है। इस पर गांधी जी ने कहा, यदि भारत के करोड़ों किसानों की दयनीय स्थिति सुधारनी है तो उन्हें जमींदारों की हजारों एकड़ जमीन वापस करनी होगी। यह रास्ता आसान नहीं है, लेकिन भूमि आवंटन ही एकमात्र रास्ता है। इस कार्य में हिंसा की संभावना है, लेकिन विकल्प यह है कि जमींदारों का मन बदल दिया जाए या कानून द्वारा भूमि का वितरण कर दिया जाए।

सारांश

गांधीजी अहिंसा को सत्य और जीवन का साधन मानते थे। उनके अनुसार, अहिंसा के निरंतर अभ्यास का अर्थ अंततः सत्य की प्राप्ति है, लेकिन इसमें हिंसा नहीं है। इसलिए मेरी रुचि अहिंसा में अधिक है, सत्य रूप से पाना अहिंसा को मैंने एक संघर्ष के बाद पाया। अहिंसा प्रेम है, त्याग है। अहिंसा मरने की कला सीखती है मार की नहीं, क्योंकि इस दुनिया की कोई भी ताकत अहिंसा का मुकाबला नहीं कर सकती। गांधीजी ने देखा कि निजी जीवन में अहिंसा और बाहरी जीवन में हिंसा एक साथ नहीं चल सकती। इसलिए उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में अहिंसा का पालन करने पर जोर दिया। गांधीजी के समग्र राजनीतिक दर्शन की उस समय भी कई ओर से आलोचना की गई थी। क्योंकि उपनिवेशवाद के जुए से छुटकारा पाने के लिए कई एशियाई देशों में सशस्त्र क्रांति की लहर चल रही थी। लेकिन गांधीजी ने अपना अहिंसा का मार्ग नहीं छोड़ा और न ही लोगों ने उनका साथ छोड़ा। गांधीजी के लिए अहिंसा जीवन का मूल्य था और दूसरों के लिए यह स्वतंत्रता का मार्ग था। इस हथियार के कारण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लोगों में भ्रम पैदा नहीं हुआ, वे निडर होकर इसमें शामिल हुई और देश स्वतंत्र हो गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. आलम फिरोज - गांधीजी और सत्याग्रह -प्रकाशन साक्षरता निकेतन, लखनऊ प्र. सं. 1968
२. काकासाहेब कालेलकर - गुजरात मे गांधी युग -काकासाहेब कालेलकर सारक निधी सन्निधी, राजघाट मुंबई प्र. सं. 1996
३. चोबे गोरखनाथ - हमारी आजादी और गांधीजी - सर्वोदय साहित्य प्रकाशन, वाराणसी प्र. सं .1969
४. जैन यशपाल - अहिंसा की कहानी - गांधी स्मारक निधी सस्ता साहित्य मंडळ, नई दिल्ली प्रसं .1965
५. दुबे अखिलेश्वर - गांधी दर्शन की रूपरेखा - नादर्न बुक सेंटर अन्सारी रोड दर्यागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2007
६. व्यावहारिक अहिंसा: अहिंसा की एक विचारधारा - केजी मशरूवाला